श्री सम्मेतशिखर तीर्थ

चित्रावली

प्रकाशक—

नथमल चण्डालिया

(फोटोग्राफर)

जयपुर निवासी

१४, लोअर चितपुर रोड,

कलकत्ता।

प्रथमावृत्ति १०००

वीर सं० २४५४

मूल्य २) रेशमी जिल्द

पुस्तक मिलनेका पता—

(१) नथमल चण्डालिया

६४, लोअर चितपुर रोड,

कलकत्ता।

(२) इन्द्रचन्द रतनचन्द जैनीवाल

भैरूंजीका रास्ता जयपुर सिटी

(राजपूताना)

इस पुस्तकके चित्रोंकी छपाई गया आर्ट प्रेस कलकत्तामें कराई गई और पाठ्य विषय वणिक् प्रेस, कलकत्तेमें मुद्रित किया गया।



नथमल चण्डालिया

फोटोग्राफर

भूमिका

प्यारे पाठक वृन्द !

संसारके समस्त धर्मावलम्बियोंने तीर्थ-भूमिको पवित्र माना है। इसीसे तीर्थ-यात्राको महत्त्व-युक्त समझ कर हर एक धर्मावलम्बी अपने-अपने तीर्थोंकी यात्रा करते हैं। जैन-समाजमें यात्रा करनेकी प्रथा अन्य धर्मावलम्बियोंकी अपेक्षा अधिक है, क्योंकि जैन शास्त्रोंमे भी तीर्थ-यात्राको बड़ा ही महत्त्व दिया गया है। श्रीसम्मेतशिखर तीर्थका वर्णन और महात्म्य अनेक शास्त्रोंमें आता है। एवं इसके लिये खास तौरपर "सम्मेदशिखर महात्म्य" नामक ग्रन्थ भी अपने पूर्वाचार्योंने बनाया है। एवं अन्यान्य तीर्थोंकी अपेक्षा इस तीर्थका महात्म्य सर्वोत्तम और अधिक है। अतः हर एक जैन धर्मानुयायी अपने जीवनमे एक बार इस तीर्थकी यात्रा करना परम आवश्यक कर्त्तव्य समझता है।

उस परमाराध्य इष्टदेवको कृपासे मैं आप महानुभावोंके समक्ष श्री सम्मेतशिखर नामकी यह छोटीसी परमोपयोगी

पुस्तिका लेकर उपस्थित हुआ हूँ। यद्यपि यह पुस्तक आकारमें बहुत ही छोटी है, तो भी सम्मेतशिखरकी यात्रा करनेवालोंके लिये यह डायरीका काम देती है। इस पुस्तकके सहारे मनुष्य बिना किसीसे पूछे सुगमतासे दर्शनीय स्थानोंकी यात्रा आनन्द पूर्वक कर सकता है।

जैन शास्त्रोंमें तीर्थंकरोंके च्यवन, जन्म, दीक्षा, केवल-ज्ञान और मोक्ष इन पाँच कल्याणकोंकी पवित्र भूमिको तीर्थ-रूपमें माना गया है। वर्त्तमान चौविसीके पहले तीर्थंकर श्रीआदिनाथ भगवान्, बारहवें श्रीवासुपूज्य स्वामी, बावीसवे श्रीनेमनाथजी और अन्तिम तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामीको छोड़कर बाकीके बीसों तीर्थंकरोंने इसी शिखर-पर्वतपर मोक्ष प्राप्त किया है। इस लिये अधिक महत्व समझा गया है।

इस तीर्थको जानेके लिये दो मार्ग हैं। एक इस्टइण्डिया रेल्वेके मधुपुर जङ्क्शन-स्टेशनसे गिरडी स्टेशन उतरना पड़ता है। वहाँपर श्रीसुपार्श्वनाथ भगवानका मन्दिर और यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला भी बनी हुई है। इस जगहसे मोटर सवारी द्वारा मधुवन-शिखरजी जाया जाता है। मार्गमें "ऋजुवालिका" नामकी नदी पड़ती है, जहाँ पर भगवान महावीर स्वामीको केवल-ज्ञान हुआ था। इस

जगह मन्दिर और यात्रियोंके ठहरनेके लिये धर्मशाला भी बनी हुई है।

दूसरा मार्ग इस्ट इण्डिया रेलवेकी ग्राण्ड कर्ड लाइनसे इसरी स्टेशन उतरना पड़ता है। जहाँसे मोटर सवारी या बैलगाड़ी द्वारा मधुवन शीखरजी जा सकते हैं। किन्तु इस मार्गके द्वारा आने जानेसे उक्त दो यात्रायें छूट जाती हैं।

आप सज्जनोंके समक्ष प्रस्तुत पुस्तिकाके उपस्थित करनेका जो मैंने साहस किया है। उसका प्रधान कारण यह हुआ कि इधर कुछ वर्ष पहले इस तीर्थके सम्बन्धमें श्वेतांबर और दिगम्बरोंमें मुकदमा चल रहा था। उस समय वहाँकी टोंकोंके चरण-लेख और प्रतिमाओंके लेखोंको कोर्टमें दाखिल करनेका आवश्यकता पड़ी थी।

यह कार्य कहाँ तक कठिन और परिश्रम साध्य है, वह चित्र-विद्या-फोटोग्राफिके ज्ञाता ही भलीभाँति समझ सकते हैं। यह कार्य बड़ी भारी जिम्मेवारीका था। फिर भी अन्यान्य बहुतसे सुप्रसिद्ध चित्रकार—फोटोग्राफरोंके रहते हुए भी जो मुझे यह कार्य मिला, इसके लिये मैं अपनेको परम शौभाग्यशाली समझता हूँ। मैंने भी अपनी शक्तिके अनुसार दत्तचित्त होकर इस कार्यको सम्यक् रूपसे संपादन करनेमें किसी तरहकी कमी न रखी।

चरणों एवं प्रतिमाओंपर जो लेख खुदे हुए थे और समय-समयपर श्वेतांबर श्रीसंघकी ओरसे जहां जहांपर जिर्णोद्धार हुए हैं, उनके लेख वगैरह जो मुझे वर्तमान अवस्थामे प्राप्त हुए थे, उनके चरण और प्रतिमाओं सहित ब्लाक बनवाकर इस पुस्तकमें निवेशित किये हैं। साथ ही उनका संक्षिप्त परिचय भी दे दिया है, जिससे पाठकोंको समझनेमें अधिक अनुकूलता होगी।

जिन यात्रियोंने इस पवित्र तीर्थके दर्शन पूजन किये हैं, वे ठीक तरह अनुभव कर सकें होंगे, कि शिखरपरके चरण-लेख और जिर्णोद्धारके लेखपर छतरियोंके रहनेपर भी हवा और पानी आदिके आनेसे चरणोंपर कई तरहके मेले दाग वगैरः जम गये हैं, उनको निकालनेके लिये बहुत कुछ प्रयत्न करनेपर भी किसी किसी स्थानपर निशान रह ही गये हैं। एवं किसी-किसी स्थलपर लेखकी त्रुटियोंसे और कहीं कारीगरोंके प्रमादसे तथा कहीं कहीं अक्षरोंमें मैल जम जानेसे चित्रोंमें भी वे अशुद्धियां दृष्टिगोचर होंगी। एवं कई स्थानोंके लेख जो स्थानकी कमीके कारण फोटोमें नहीं आसके हैं उन लेखोंकी नकल भी टाइप द्वारा छपवा दी गयी है।

उपरोक्त वीस तीर्थंकरोंके मोक्ष कल्याणकके चरणोंके सिवा शेष चार तीर्थंकरोंके चरण, चार शाश्वते तीर्थंकरोंके चरण,

और गौतमादि गणधरोंके चरण भी पहाड़पर विराजमान हैं। पहाड़के मध्यमें जल मन्दिर भी बहुत ही रमणीय बना हुआ है। इसी तरह पहाड़पर कई जगह क्षेत्रपालजीकी स्थापना भी की गई हैं। और धर्मशालायें भी बनी हुई हैं। अस्तु।

पूज्यपाद गुरुजी महाराज पं० प्र० श्री १०८ श्री सूर्य्य-मलजी यतिजीने इस चित्रावली पुस्तकके शास्त्रीय विषयमें बहुतसी बातें देखकर मुझे बतानेमें जो सहायता प्रदान की है, जिसके लिये मैं गुरुजी महाराजका पूर्ण अनुगृहीत हूँ। और आशा करता हूँ कि आइन्दा और कार्यमें भी हमपर अनुग्रह रखते हुए सहायता किया करेंगे।

हमारे साधर्मिक साहित्य-प्रेमी श्रीमान् बाबू पूरणचन्द-जी नहार एम० ए० एल० एल० बी० महोदयने भी इस कार्य-में मुझे जो सहायता पहुंचायी है, वह विशेष उल्लेखनीय है। तीर्थंकरोंके च्यवन, जन्म आदि कल्याणकोंकी तिथियोंमे जो कुछ भिन्नता दिखाई पड़ती थी, उसके लिये आपने श्रीमती गुलाब कुमारी लाईब्रेरीसे पुस्तकादि अवलोकनकर और श्री जेसलमेर, आबू आदि पञ्चकल्याणकोंकी तिथियोंके शिलालेख और हस्त लिखित "सत्तरिसयठाणं" आदि ग्रन्थोंसे मिलान करनेमें जो सहायता दी है, इसके लिये मैं उनका विशेष आभार मानता हूँ।

इस जगह मैं अपने प्रिय मित्र पण्डित काशीनाथजी जैनका पूर्ण अनुगृहीत हूँ, जिन्होंने प्रूफ संशोधन आदि कार्यमें सहायता पहुंचायी है। इसके अतिरिक्त अन्यान्य मित्रोंको भी धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने इस पुस्तकके प्रकाशनमें सहानुभूति दी है।

मुझे पूर्ण आशा है, कि इस पुस्तकको जैन बन्धु पूर्ण रूपसे अपनायेंगे। एवं श्रद्धा और प्रेम पूर्वक अवलोकनकर यात्राका समुचित लाभ भी उठावेंगे। मैंने अपनी शक्तिके अनुसार श्रीसम्मेतशिखर तीर्थका संक्षिप्त परिचय करा दिया है अगर इन महापुरुषोंका अलग अलग विवरण सहित परिचय लिखा जाय तो बड़े-बड़े शास्त्र बन जायेंगे।

यह मेरे लिये प्रथम ही अवसर है, कि पाठकोंकी सेवामे सचित्र पुस्तक उपस्थित कर रहा हूँ। अतः सम्भव है कि इसमें अनेक तरहकी त्रुटियें रह गयी हों। पाठकोंसे सविनय निवेदन है, कि उन त्रुटियोंको सुधार लेवें। और मुझे भी सूचित करनेकी कृपा करें, जिससे आगामी संस्करणमें सुधार ली जाँय।

निवेदक—

कलकत्ता — **नथमल चण्डालिया**

मार्गशीर्ष शुक्ला ११ सं० १९८४ — जयपुर-निवासी।

चित्र-परिचय।

हमने इस पुस्तकमें चित्रोंके दो विभाग किये हैं। आरम्भमें एकसे तेरह पृष्ठ तककी संख्या बनायी हैं, जिसमें पहले पृष्ठमें पहाड़के उपरके श्रीपार्श्वनाथ भगवानके मन्दिरका चित्र दिया है। तथा शेष बारह पृष्ठोंमें मधुवनके मन्दिरोंकी प्रतिमायें और शिला-लेख आदिके चित्र दिये हैं।

इसके बाद पुनः एकसे बत्तीस तककी पृष्ठ-संख्या बनायी है। जिसमें पहाड़के ऊपरके सभी स्थानोंके चित्र दिये हैं। और आखिरी तेतीसवें पृष्ठमें जंगम युग-प्रधान भट्टारक दादा साहब श्री १०८ श्री जिनदत्तसूरिजी तथा श्री जिनकुशल-सूरिजीकी अजमेरकी दादावाडीकी पादुकाओंका चित्र है।

श्रीपार्श्वनाथ स्वामीका मन्दिर।

इस मन्दिरकी जगह पहले एक छोटीसी टोंक थी, किंतु अब इस जगह राय बहादुर बद्रीदासजी मुकीम जौहरीने बड़ा ही सुन्दर दो मञ्जिला मन्दिर बनवा दिया है। इस जगह पूजारी,नौकर वगैरः भी रहते हैं। यह मन्दिर इतना ऊंचा है, कि तीस-चालीस माइलकी दूरीसे दर्शकोंको नजर आता है। मन्दिरके भीतर संगमरमर-मकरानाके पाषाणकी बड़ी ही रमणीय वेदो बनी हुई है। जिसमें भगवानकी चरण-पादु-कायें विराजमान हैं। इस मन्दिरकी तथा वेदीको प्रतिष्ठा

विक्रम संवत् १६५८ के माघ सुदी १३ को बड़े ही धूम-धाम और उत्सव पूर्वक की गयी थी। राय साहबने इस मन्दिरके बनवानेमें अन्दाज ७०-७५ हजार रुपये व्यय किये थे।

मधुवनके चित्रोंकी सूची।

दूसरे पृष्ठमें दो चित्र हैं, श्री मूल नायकजीके मन्दिरका और श्री भोमियाजीका है, जो धर्मशालाके बाहर स्थापित हैं।

तीसरे पृष्ठके अङ्गरेजी नोटिशका हिन्दी अनुवाद—

जैन और उच्च वर्णोंके हिन्दुओंके सिवा कोई भी जैन-श्वेताम्बरी समाजकी मधुवनकी मझली कोठीमें प्रवेश नहीं कर सकता। यदि जैन या उच्च वर्णोंके हिन्दूके सिवा कोई अन्य पुरुष उपर्युक्त कोठीमें प्रवेश करेगा तो बंगालके लेफ्टिनेन्ट गवर्नर द्वारा छोटेनागपुरके कमिश्नरको ता० ७ फरवरी सन् १८६५ ई० को दिये हुए पत्र नं० ७१६ के मजमूनके बमुजिब उसपर ताजीरात हिन्दके १५ वें अध्यायके अनुसार मुकदमा चलाया जायगा।

यह शिला लेख २५ मार्च सन् १८७० ई०के पुराने शिला-लेखके स्थानपर जनवरी सन् १९०४ में स्थापित किया गया है।

जैन श्वेताम्बरी समाजकी आज्ञासे महाराज बहादुर सिंह
ता० १ जनवरी सन् १९०४ ई० जैनेरल मैनेजर

चौथे पृष्ठमें श्रीपार्श्वनाथजीके प्र० ग० श्री शुभ स्वामीजी।

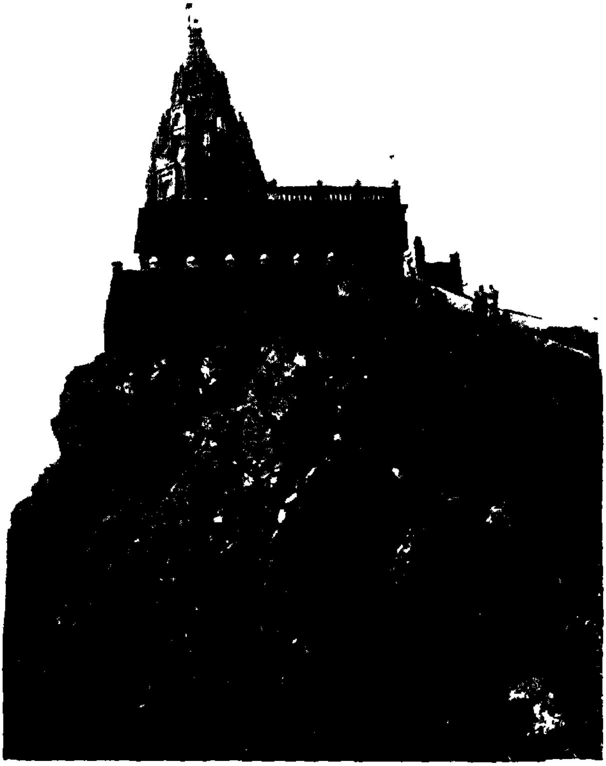
पांचवे पृष्ठमें मूल नायक श्रीपार्श्वनाथजीका चित्र है।

पृष्ठ छहसे तेरह तक सभी मन्दिरोंकी प्रतिमाओंके चित्र है।

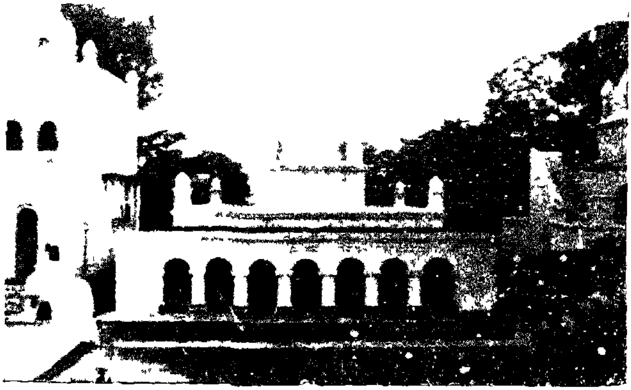
पहाड़के चित्रोंकी सूची।

विषय	पृष्ठ

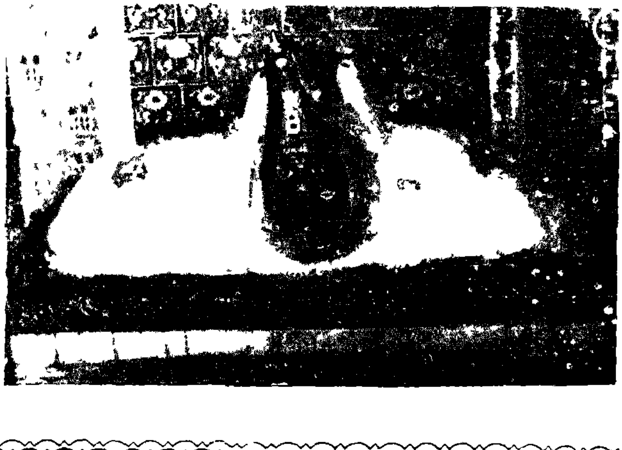
श्री सम्मेतशिखरजी (श्रीपार्श्वनाथ स्वामीका मंदिर)



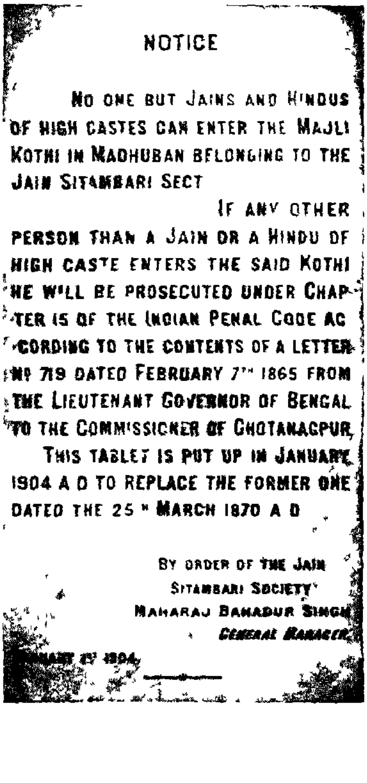
श्री जैनश्वेताम्बर मंदिर



श्री भौमियाजी



शिलालेख



NOTICE

NO ONE BUT JAINS AND HINDUS OF HIGH CASTES CAN ENTER THE MAJLI KOTHI IN MADHUBAN BELONGING TO THE JAIN SITAMBARI SECT

IF ANY OTHER PERSON THAN A JAIN OR A HINDU OF HIGH CASTE ENTERS THE SAID KOTHI HE WILL BE PROSECUTED UNDER CHAPTER 15 OF THE INDIAN PENAL CODE ACCORDING TO THE CONTENTS OF A LETTER NO 719 DATED FEBRUARY 7TH 1865 FROM THE LIEUTENANT GOVERNOR OF BENGAL TO THE COMMISSICNER OF CHOTANAGPUR.

THIS TABLET IS PUT UP IN JANUARY 1904 A D TO REPLACE THE FORMER ONE DATED THE 25TH MARCH 1870 A D

BY ORDER OF THE JAIN
SITAMBARI SOCIETY
MAHARAJ BAHADUR SINGH
GENERAL MANAGER.

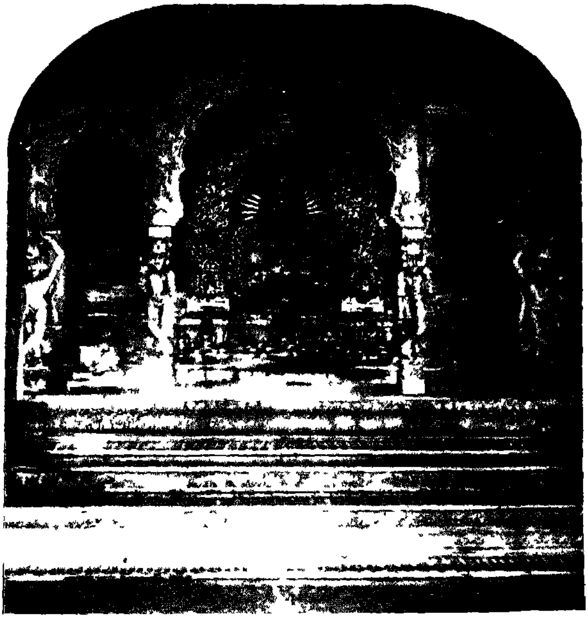
[illegible] 1904.

श्री सुभस्वामि (गणधर)



॥ सं । १८८५ मि । फाल्गुन सुदि ३ रवौ श्रीपार्श्वनाथस्य श्री सुभस्वामि गणधर बिंबं प्रतिष्ठितं । भ । श्री जिन हर्ष सूरि भिः बृहत्खरतरगच्छे कारीतं वालुचर वास्तव्य श्री संघेन ॥

श्री पार्श्वनाथजी

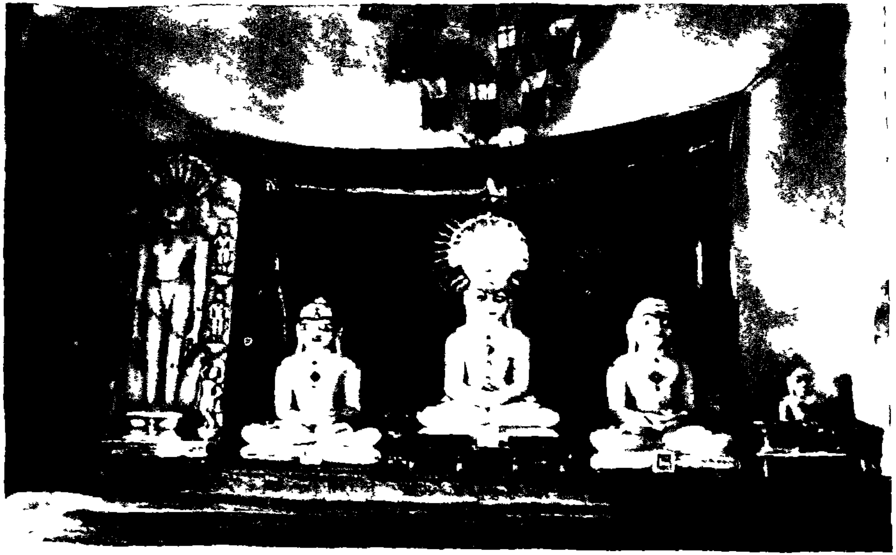


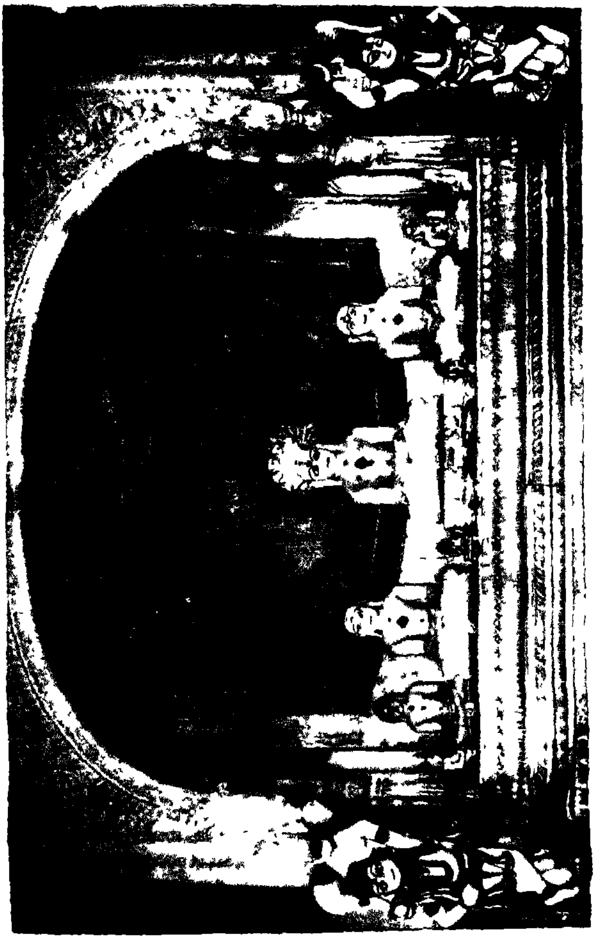
(श्रीमूलनायकजी) सं १८७७ राधराकयां श्री पार्श्व बिंबं प्र० श्री जिन हर्षसूरिणा कारीतं मिरगां जाति वसापन सिंह ज पदार्थमल्लेन काश्याम

(दाहिने तरफ) सं १८८७ वर्षे मिति फाल्गुण शुक्ल १३ श्री पार्श्वनाथ जिन बिंबं दुगड़ जेठमल्ले स्य भार्या फति नाम स्य का० प०

(बाये तरफ) सं १८८८ माघ सुदि ५ सोमे श्री शीतलनाथ बिंबं कारितं उश यंशे दुगड़ गो० प्रतापसिंह ने प्रतिष्ठिता वृ० खरतर गच्छे त

॥ श्री सुपार्श्वनाथजी ॥ (कालीकादासजी का मंदिर)





श्री पार्श्वनाथजी



श्री संभवनाथजी



श्री चंद्रप्रभुजी



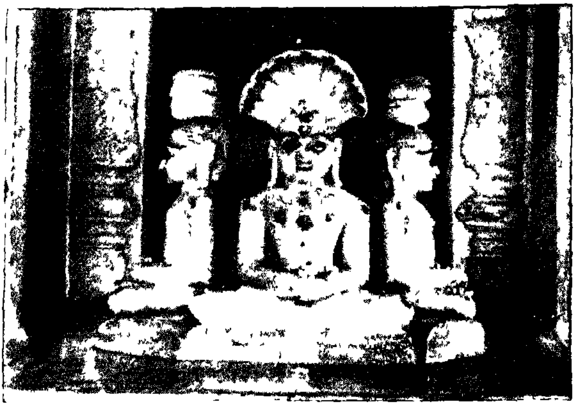
श्री चंद्रप्रभुजी



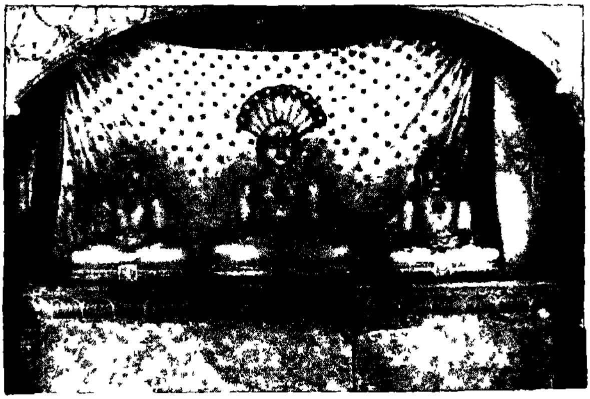
श्री पार्श्वनाथजी



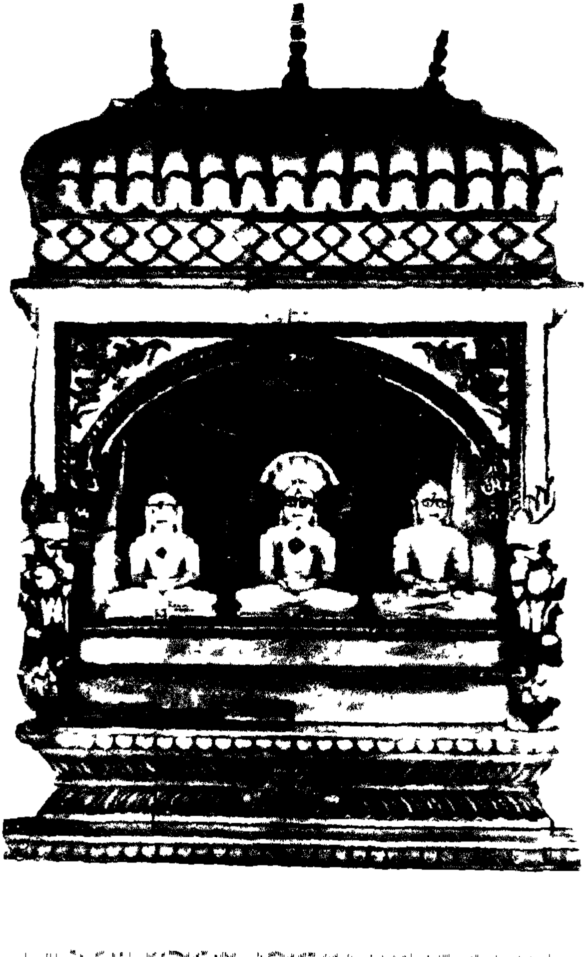
श्री सुपार्श्वनाथजी



श्री पार्श्वनाथजी



श्री पार्श्वनाथजी



श्री गेवडी पार्श्वनाथजी



श्री भोमियाजी।

धर्मशालासे पहाड़की ओर चढ़नेपर दक्षिणकी तरफ एक गुमटी है, वह क्षेत्रपालजीकी है।

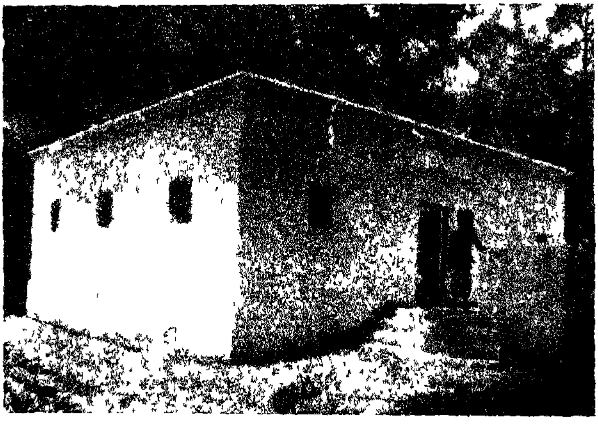
धर्मशाला।

यह धर्मशाला श्वेताम्बर श्रीसंघकी ओरसे बनी है। पहाड़से उतरते समय इसी धर्मशालामें यात्रियोंको भाता दिया जाता है।

श्री भोमियाजी



धर्म्मशाला



पुल (गन्धर्वनाला)



भैरुंजी (देहरी)



गंधर्वनाला।

श्री जैन-श्वेताम्बर सभाकी ओरसे इस नालेपर लकड़ीका पुल बना हुआ है। इसके नीचेसे हर समय पानी पहाड़से बहता रहता है। यहांका दृश्य परम रमणीय है। यहांसे थोड़ी ही दूर जानेपर एक रास्ता सीता नालेकी ओर आता है और दूसरा श्री पार्श्वनाथ स्वामीके मन्दिरकी तरफ आता है। इस जगह यात्रियोंको सूचित करनेके लिये साइनबोर्ड भी लगे हैं

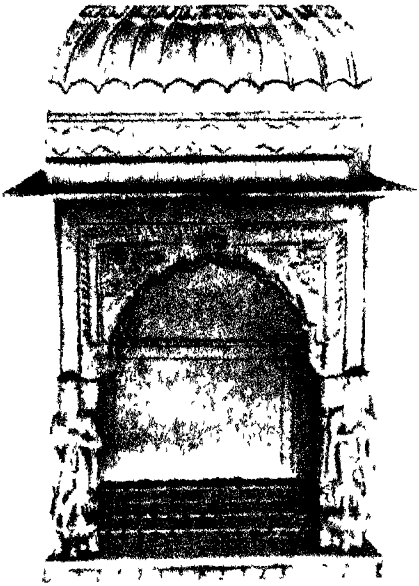
भैरूंजी।

सीता नालेके पास श्री भैरूँजीकी दो प्राचीन देहरियाँ भी हैं, जो जैन-श्वेताम्बर श्रीसंघकी तरफसे बनी हुई हैं। यहाँका दृश्यभी बड़ाही मनोहर है।

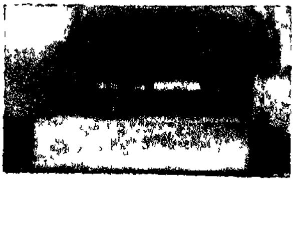
श्री गौतमस्वामीजीकी टोंक।

पहाड़के ऊपर दाहिने तरफ यह टोंक पड़ती है, तथा बांई तरफ श्रीकुंथुनाथजीकी टोंक अवस्थित है। इसके भीतर संगमर्मरकी (मकराना) बनी हुई वेदी दीवालमें लगी है। उस वेदीके भीतर चरणोंके चारों ओर यह लेख अंकित है॥ संवत् १९४२ का मि० पौष शुक्ला त्रयोदश्यां वारे सोम वारे श्री चतुर्विंशत् जिन साधु संख्या पादुकाः श्री पार्श्वजिन गणधर पादुका खरतरगच्छे महो श्री दानसागर गणिः ततः शिष्य । पं० हितवल्लभ मुनिना प्रतिष्ठितं ॥ गुज्जर देशान्तर्गतः मांडल वास्तव्य वीर सोभाग्यवर लक्ष्मीचंदेन श्री शमेत शिखरि परि स्थापितं। श्री चौवीस तीर्थंकर महाराज परवार सहित। और इसी लेखमें मोक्ष गये हुए साधुओंकी संख्या भी अंकित की हुई है। दाहिनी तरफ श्याम पाषाण-की श्री गौतमस्वामीजीकी पादुका विराजमान है, यहांसे ही यात्री लोग केशर आदि सामग्री लेकर पूजन प्रारम्भ करते हुए श्री कुंथुनाथजीकी टोंकको जाते हैं। इसी स्थानसे बांईं तरफ रास्ता श्री चन्द्रप्रभुजीकी टोंकको जाता है। दाहिने ओर श्री पार्श्वनाथजीके मन्दिरको तथा सन्मुख श्री जल-मन्दिरको गया है।

श्री चतुर्विंशति तीर्थङ्कर पादुका



श्री गौतमगणधर पादुका



श्री कुंथुनाथजी



सम्वत् १९९२ माघ शुक्ले १० बुधे। श्री कुंथुजिनेन्द्रस्य चरणपादुका
जीर्णोद्धार स्वरूप मम्बई वास्तव्य सेठ केसरजी नायकेन स्थापनाका-
रापिता खरतरभिः। श्री विजयगच्छे। श्री जिनचन्द्रसागरसूरि पट्टोदय प्रभाक-
रक। श्री जिन शांतिसागरसूरि नि। प्रतिष्ठिता स्थापिता च।

श्री कुंथुनाथजी।

नाम	श्री कुंथुनाथजी,
नगरी	गजपुर
वंश	इक्ष्वाकु
पिता	शूर राजा
माता	श्री रानी
विमान	सर्वार्थसिद्ध (पञ्चम)
च्यवन	श्रावण कृष्णा ९
जन्म	वैशाख कृष्णा १४
चिन्ह	छाग (बकरा)
वर्ण	सुवर्ण (पीला)
अवगाहना	पैंतीस धनुष
दीक्षा	वैशाख कृष्णा ५
केवलज्ञान	चैत्र शुक्ला ३
मोक्ष-स्थान	सम्मेतशिखर
तप	मासक्षमण
साधु-संख्या	एक सहस्र
आयुष्य	पिच्यानवे हजार
निर्वाण	वैशाख कृष्णा १

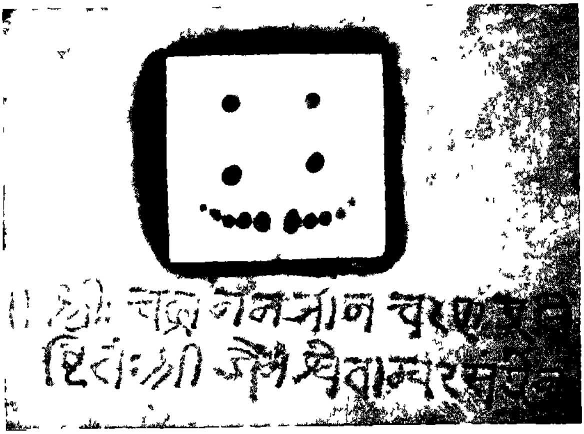
श्रीचंद्राननजी-श्रीऋषभाननजी ।

इन शाश्वते तीर्थंकरोंकी पादुकायें श्री जैन-श्वेताम्बर श्रीसंघकी ओरसे प्रतिष्ठित की गई हैं। श्री चंद्राननजीकी पादुका श्वेत पाषाणकी और श्रीऋषभाननजीकी पादुका श्याम पाषाणकी है। यह दोनों प्रतिमायें नन्दीश्वर द्वीपके अंजन गिरि पर्व्वतके मन्दिरमें शाश्वत चौमुख * शोभायमान हैं।

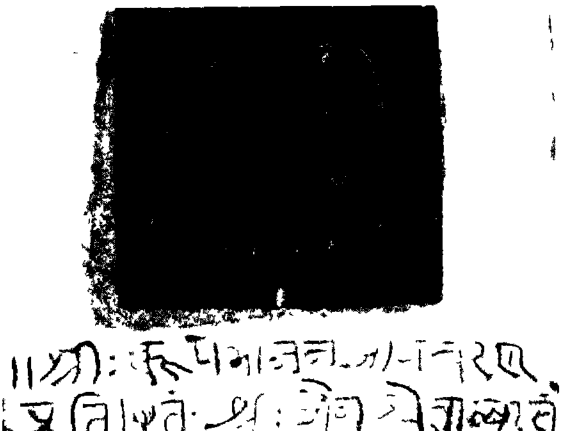
---

* ऋषभाननजी, चन्द्राननजी, वारिषेणजी और वर्द्धमानजी ये चारों प्रतिमायें एक साथ चौमुख रूपसे विराजमान हैं।

श्री चंद्राननजी



श्री ऋषभाननजी



श्री नमिनाथजी



।संवत् १९०३ वर्षे माघ शुक्ले दशम्यां बुधवासरे। श्री नमिनाथजिनेन्द्रस्य चर
णपादुका। जीर्णोद्धारस्वरूप। अहमदाबाद वास्तव्य। सेठ उजमालाइ द्वी सिद्दे
न स्थापना कारापिता। श्री विमल विजय गच्छे। भट्टारक श्री जिनशांति सा
गर सूरिभि। प्रतिष्ठितं।।

श्री नमिनाथजी ।

नाम	श्री नमिनाथजी
नगरी	मथुरा
वंश	इक्ष्वाकु
पिता	विजय राजा
माता	विप्रा रानी
स्वर्ग	प्राणत (दशम)
च्यवन	आश्विन शुक्ला १५
जन्म	श्रावण कृष्णा ८
चिन्ह	कमल (नीलोत्पल)
वर्ण	पीत (पीला)
अवगाहना	पञ्चदश धनुष
दीक्षा	आषाढ़ कृष्णा ९
केवलज्ञान	मार्गशिर्ष शुक्ला ११
मोक्ष-स्थान	सम्मेत शिखर
तप	मासक्षमण
साधु-संख्या	एक सहस्र
आयुष्य	दश सहस्र वर्ष
निर्वाण	वैशाख कृष्णा १०

श्री अरनाथजी।

नाम	श्री अरनाथजी
नगरी	हस्तीनापुर
वंश	इक्ष्वाकु
पिता	सुदर्शन राजा
माता	देवी रानी
विमान	सर्वार्थसिद्ध (पंचम)
च्यवन	फाल्गुन शुक्ला २
जन्म	मार्गशिर्ष शुक्ला १०
चिन्ह	नंद्यावर्त्त
वर्ण	कनक (पीला)
अवगाहना	तीस धनुष
दीक्षा	मार्गशिर्ष शुक्ला ११
केवलज्ञान	कार्त्तिक शुक्ला १२
मोक्ष-स्थान	सम्मेतशिखर
तप	मासक्षमण
साधु-संख्या	एक सहस्र
आयुष्य	चौरासी हजार वर्ष
निर्व्वाण	मार्गशिर्ष शुक्ला १०

श्री अरनाथजी



सवत् १६८२ । माघे । आरवेवद । श्री अरह नाथ जिनेंद्रस्य । चरणपादुका ।।
सं। सिंघार हूपा । गुजरात का श्री सहेतनत्य । स्थापना कारापिता । मलत्य ।।
प्रतिष्ठा । बिजयगच्छे । जा । युग । ना । श्री जिन शांतिसागर सूरिभि । प्रतिष्ठितं ।।

श्री मल्लिनाथजी



॥संवत १८९३ माघ सु॥ १०॥ चंद्रे॥ श्रीमल्लिनाथजिनेंद्र पादुकाजी

॥ ... अहमदाबादवास्तव्य सेठ ... कारापिता। मलधार

॥ ... श्रीमल्लिजयगच्छे। भट्टारक। श्री ... श्रीजिनशांतिसागरसूरिभिः

॥प्रतिष्ठितं स्थापितं च॥

[illegible]

नाम	[illegible]
नगरी	मिथिला
वंश	इक्ष्वाकु
पिता	कुम्भ राजा
माता	प्रभावती रानी
विमान	सर्वार्थसिद्ध (पंचम)
च्यवन	फाल्गुन शुक्ला ४
जन्म	मार्गशिष शुक्ला ११
चिन्ह	कलश
वर्ण	नील (हरित)
अवगाहना	पचीस धनुष
दीक्षा	मार्गशिर्ष शुक्ला ११
केवलज्ञान	मार्गशिर्ष शुक्ला ११
मोक्ष-स्थान	सम्मेतशिखर
तप	मासक्षमण
साधु-संख्या	पांच सौ
आयुष्य	पचपन हजार वर्ष
निर्व्वाण	फाल्गुन शुक्ला १२

श्री श्रेयांसनाथजी।

नाम	श्री श्रेयांसनाथजी
नगरी	सिंहपुरी
वंश	इक्ष्वाकु
पिता	विष्णु राजा
माता	विष्णु रानी
स्वर्ग	अच्युत (बारम)
च्यवन	ज्येष्ठ कृष्णा ६
जन्म	फाल्गुन कृष्णा १२
चिन्ह	गेंडा
वर्ण	कंचन
अवगाहना	अस्सी धनुष
दीक्षा	फाल्गुन कृष्णा १३
केवलज्ञान	माघ कृष्णा १५
मोक्ष-स्थान	सम्मेतशिखर
तप	मासक्षमण
साधु-संख्या	एक सहस्र
आयुष्य	चौरासी लाख वर्ष
निर्व्वाण	श्रावण कृष्णा ३

श्री श्रेयांसनाथजी

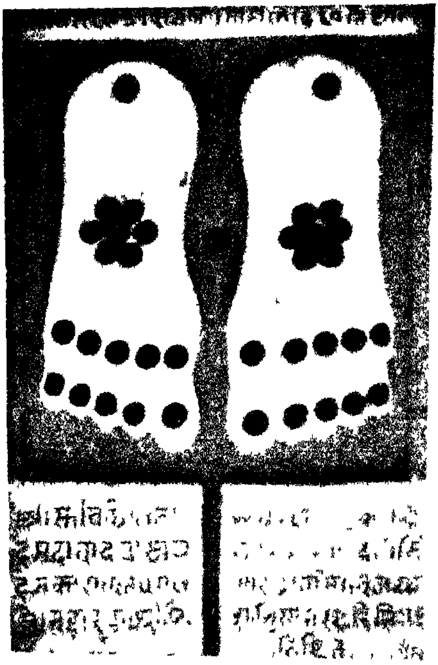


॥ संवत् १८९२ माघे शुक्ल ५ तिथौ । श्री श्रेयांसनाथ जिनेंद्रस्य चरणपादुका

॥ जीर्णोद्धारस्य कागुजरातका श्रीसंघेन तत्पश्चात् [illegible] कारापिता

॥ भ० श्री महिजय गच्छे ला० श्री पूज्य श्री जिनशान्तिसागरसूरिभिः प्रतिष्ठितं ॥

श्री सुविधिनाथजी



[illegible]

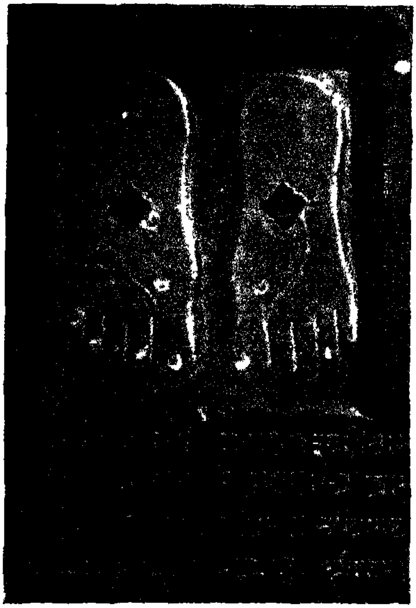
श्री सुविधिनाथजी ।

नाम	श्री सुविधिनाथजी
नगरी	काकन्दी
वंश	इक्ष्वाकु
पिता	सुग्रीव राजा
माता	रामा रानी
स्वर्ग	आणत (नवम)
च्यवन	फाल्गुन कृष्णा ६
जन्म	मार्गशिर्ष कृष्णा ५
चिन्ह	मगर मच्छ
वर्ण	श्वेत (सफेद)
अवगाहना	एक सौ धनुष
दीक्षा	मार्गशिर्ष कृष्णा ६
केवलज्ञान	कार्तिक शुक्ला ३
मोक्ष-स्थान	सम्मेतशिखर
तप	मासक्षमण
साधु संख्या	एक सहस्र
आयुष्य	दो लाख पूर्व
निर्व्वाण	भाद्रपद शुक्ला ९

श्री अनंतनाथजी ।

नाम	श्रीअनंतनाथजी
नगरी	अयोध्या
वंश	इक्ष्वाकु
पिता	सिंहसेन राजा
माता	सुयशा रानी
स्वर्ग	प्राणत (दशम)
च्यवन	श्रावण कृष्णा ७
जन्म	वैशाख कृष्णा १३
चिन्ह	सींचाण (शिकरा पत्ती)
वर्ण	सुवर्ण (कंचन)
अवगाहना	पचास धनुष
दीक्षा	वैशाख कृष्णा १४
केवलज्ञान	वैशाख कृष्णा १४
मोक्ष-स्थान	सम्मेतशिखर
तप	मासक्षमण
साधु-संख्या	सप्त सहस्र
आयुष्य	तीस लाख वर्ष
निर्व्वाण	चैत्र शुक्ला ५

श्री अनंतनाथजी



संवत १९९१ प्रवर्जो माघा सु १ । श्री अनंतनाथ जिनपादुका ।।
चरणपादुका जीर्णोद्धार रूपा श्री संघेन स्थापना कारापिता ।।
तथा प्रतिष्ठिता श्री मच्छि जयगच्छे भट्टारक श्री शांति सागर सूरिभि
प्रतिष्ठित । स्थापित ।

श्री शीतलनाथजी



संवत १८२८ वर्षे माघो कृ ५ रविवे दे। श्री सितलनाथजिनेंद्रस्य चरणपादुका जीर्णोधार॥

॥ रूपा गुजराती ओ बंधे करापिता॥

मलधार पूर्णिमा विजयगच्छे। भट्टारक। श्री जिनशांतिसागरसूरिभि ॥

। प्रतिष्ठिता। स्थापित च।

श्री शीतलनाथजी।

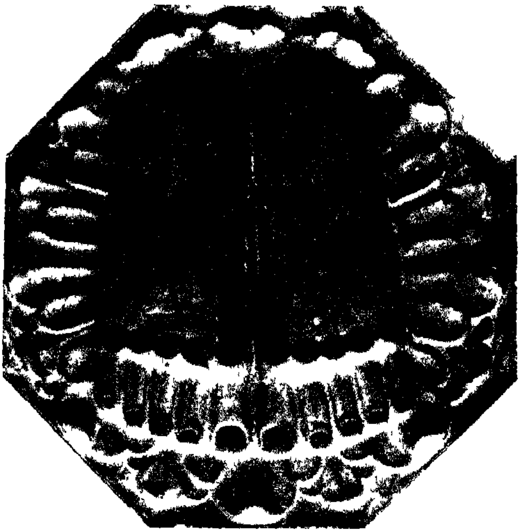
नाम	श्री शीतलनाथजी
नगरी	भद्दलपुर
वंश	इक्ष्वाकु
पिता	दृढ़रथ राजा
माता	नन्दा रानी
स्वर्ग	प्राणत (दशम)
च्यवन	वैशाख कृष्णा ६
जन्म	माघ कृष्णा १२
चिन्ह	श्रीवत्स
वर्ण	कंचन
अवगाहना	नव्वे धनुष
दीक्षा	माघ कृष्णा १२
केवलज्ञान	पौष कृष्णा १४
मोक्ष-स्थान	सम्मेतशिखर
तप	मासक्षमण
साधु-संख्या	एक सहस्र
आयुष्य	एकलक्ष पूर्व्व
निर्व्वाण	वैशाख कृष्णा २

श्री पद्मप्रभुजी ।

नाम	पद्मप्रभुजी
नगरी	कौशाम्बी
वंश	इक्ष्वाकु
पिता	धर राजा
माता	सुसीमा रानी
विमान	ग्रैवेयक (नवम)
च्यवन	माघ कृष्णा ६
जन्म	कार्त्तिक कृष्णा १२
चिन्ह	पद्म (रक्तोत्पल)
वर्ण	रक्त (लाल)
अवगाहना	दो सौ पचास धनुष
दीक्षा	कार्त्तिक कृष्णा १३
केवलज्ञान	चैत्र शुक्ला १५
मोक्ष-स्थान	सम्मेतशिखर
तप	मासक्षमण
साधु-संख्या	तीनसौ आठ
आयुष्य	तीस लाख पूर्व्व
निर्व्वाण	मार्गशीर्ष कृष्णा ११

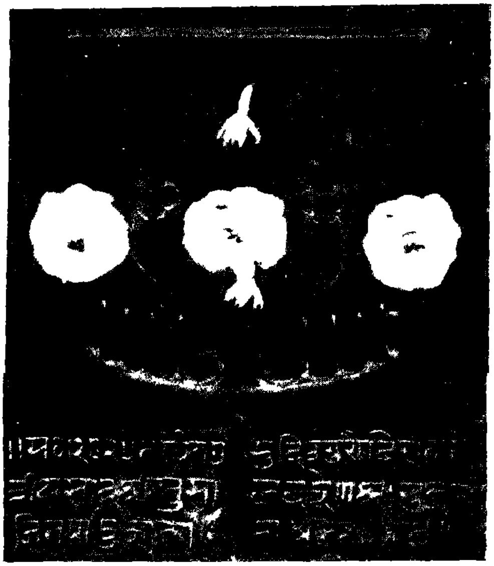
श्री पद्मप्रभुजी

।सं १५४९ माघ सु १० सुक्रवा।श्री।श्रीमे
तरां सपर्वते।श्री।पद्मप्रभु जिनपुरणख



पिं प्रति। त्ता।श्री।विजयराजसूरी
तपागछे

श्री मुनिसुव्रतजी



संवत् १९०२। माघे। सु। १० श्री मुनिसुव्रतजिनेंद्रस्य। चरणपादुका।
जीर्णोद्धारस्तूप। गुजरातका। श्रीसंघेन स्थापना कारापिता। मल।
पूर्णिमा। श्रीमद्विजयगच्छे। श्रीजिनशांतिसागरसूरिभिः। प्रतिष्ठितं।
॥ स्थापितंच॥

श्री मुनिसुव्रतजी ।

नाम	श्री मुनिसुव्रतजी
नगरी	राजगृही
वंश	हरिवंश
पिता	सुमित्र राजा
माता	पद्मावती रानी
विमान	अपराजित (चतुर्थ)
च्यवन	श्रावण शुक्ला १५
जन्म	ज्येष्ट कृष्णा ८
चिन्ह	कच्छप (कछुआ)
वर्ण	श्याम
अवगाहना	बीस धनुष
दीक्षा	फाल्गुन शुक्ला १२
केवलज्ञान	फाल्गुन कृष्णा १२
मोक्ष-स्थान	सम्मेतशिखर
तप	मासक्षमण
साधु-संख्या	एक सहस्र
आयुष्य	तीस हजार वर्ष
निर्वाण	ज्येष्ट कृष्णा ९

श्री चंद्रप्रभुजी।

नाम	श्री चन्द्रप्रभुजी
नगरी	चन्द्रपुरी
वंश	इक्ष्वाकु
पिता	महसेन राजा
माता	लक्ष्मणा रानी
विमान	वैजयन्त (द्वितीय अनुत्तर)
च्यवन	चैत्र कृष्णा ५
जन्म	पौष कृष्णा १२
चिन्ह	चन्द्र (चन्द्रमा)
वर्ण	श्वेत
अवगाहना	डेढ़ सौ धनुष
दीक्षा	पौष कृष्णा १३
केवलज्ञान	फाल्गुन कृष्णा ७
मोक्ष स्थान	सम्मेतशिखर
तप	मासक्षमण
साधु संख्या	एक सहस्र
आयुष्य	दस लाख पूर्व्व
निर्व्वाण	भाद्रपद कृष्णा ७

श्री चंद्रप्रभुजी



संवत् १६३१ माघे । शु । १० ।चंद्र श्री चंद्रप्रभु जिनेन्द्रस्य चरण पादुका । मलधार पूर्णिमा । श्री मह्विजयगच्छे । भ । श्री जिन शांति सागर सुरिभिः । प्रतिष्ठितं । स्थापितं

श्रेयसेस्तु । श्री संघेन कारापिता ।

श्री आदिनाथजी



॥ सं । १९४९ माघ शुक्रवारे श्री समेत शैलस्य पर्वतोपरि भव्य जोवस्य दर्शनार्थ श्रीमत् आदिनाथस्य चरण पादुका स्थापिता राय धनपतिसिंह बाहादुरेण का० प्र० श्री विजयराज सूरि तपागच्छे ॥

श्री आदिनाथजी।

नाम	श्रीआदिनाथजी
नगरी	विनीता (अयोध्या
वंश	इक्ष्वाकु
पिता	नाभी राजा
माता	मरुदेवी रानी
विमान	सर्वार्थसिद्ध (पञ्चम अनुत्तर)
च्यवन	आषाढ़ कृष्णा ४
जन्म	चैत्र कृष्णा ८
चिन्ह	वृषभ (बैल)
वर्ण	सुवर्ण
अवगाहना	पांच सौ धनुष
दीक्षा	चैत्र कृष्णा ८
केवलज्ञान	फाल्गुन कृष्णा ११
मोक्ष-स्थान	अष्टापद (कैलाश)
तप	अट्ठम (तेला)
साधु-संख्या	दस सहस्र सहित
आयुष्य	चौरासी लाख पूर्व्व
निर्व्वाण	माघ कृष्णा १३

श्री सम्भवनाथजी।

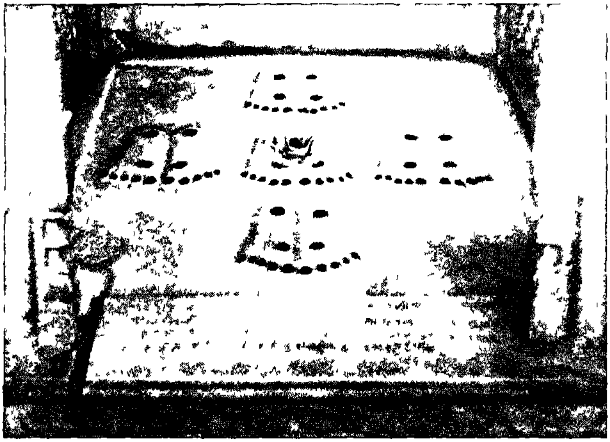
नाम	श्री सम्भवनाथजी
नगरी	सावत्थी
वंश	इक्ष्वाकु
पिता	जितारि राजा
माता	सेना रानी
विमान	ग्रैवेयक (सप्तम)
च्यवन	फाल्गुन शुक्ला ८
जन्म	मार्गशीर्ष शुक्ला १४
चिन्ह	अश्व (घोड़ा)
वर्ण	कंचन
अवगाहना	चार सौ धनुष
दीक्षा	मार्गशीर्ष शुक्ला १५
केवलज्ञान	कार्तिक कृष्णा ५
मोक्ष-स्थान	सम्मेतशिखर
तप	मासक्षमण
साधु-संख्या	एक सहस्र सहित
आयुष्य	साठ लाख पूर्व
निर्वाण	चैत्र शुक्ला ५

श्री संभवनाथजी



॥संबत् १९२१॥ माघे॥ शु॥ १०॥ वुधे॥ श्री संभवजिनेंद्रस्य।
चरणपादुका श्रीसंघेन कारापिता। मलधार पूर्णिमा
॥विजयगच्छे। श्रीभट्टारकोत्तम श्रीपूज्य श्री जिनशांति
॥सागरसूरिभिः प्रतिष्ठितं॥

श्री वासुपूज्यजी



सं । १६२५ फा० कृष्ण ५ बुधवासरे श्री चंपापुरे तीर्थे श्री वासपूज्य जी पंच कल्याणक चरण न्यास मकसुदाबाद वास्तव्य दुगड सा: प्रतापसिंह भार्जा महताब कुमार ज्येष्ठ सुत लक्ष्मीपतस्य कनिष्ट भ्रात धनपत सिंह कारापितं प्रतिष्ठितं भ: श्री जिनहंस सूरिभि: बृहत्खरतरगच्छे ॥

श्री वासुपूज्यजी ।

नाम	श्री वासुपूज्यजी
नगरी	चम्पापुरी
वंश	इक्ष्वाकु
पिता	वासुपूज्य राजा
माता	जया रानी
स्वर्ग	प्राणत (दशम)
च्यवन	ज्येष्ठ शुक्ला ९
जन्म	फाल्गुन कृष्णा १४
चिन्ह	पाड़ा (भैंसा)
वर्ण	रक्त (लाल)
अवगाहना	सत्तर धनुष
दीक्षा	फाल्गुन कृष्णा १५
केवलज्ञान	माघ शुक्ला २
मोक्ष-स्थान	चम्पापुरी
तप	मासक्षमण
साधु-संख्या	छह सौ सहित
आयुष्य	बहत्तर लाख वर्ष
निर्व्वाण	आषाढ़ शुक्ला १४

श्री अभिनन्दनजी ।

नाम	श्री अभिनन्दनजी
नगरी	अयोध्या
वंश	इक्ष्वाकु
पिता	सम्बर राजा
माता	सिद्धार्था रानी
विमान	जयन्त (तीसरा अनुत्तर)
च्यवन	वैशाख शुक्ला ४
जन्म	माघ शुक्ला २
चिन्ह	मरकट (वानर)
वर्ण	कनक (पीला)
अवगाहना	तीन सौ पचास धनुष
दीक्षा	माघ शुक्ला १२
कैवलज्ञान	पौष शुक्ला १४
मोक्ष-स्थान	सम्मेतशिखर
तप	मासक्षमण
साधु-संख्या	एक सहस्र सहित
आयुष्य	पचास लाख पूर्व
निर्व्वाण	वैशाख शुक्ला ८

श्री अभिनंदनजी

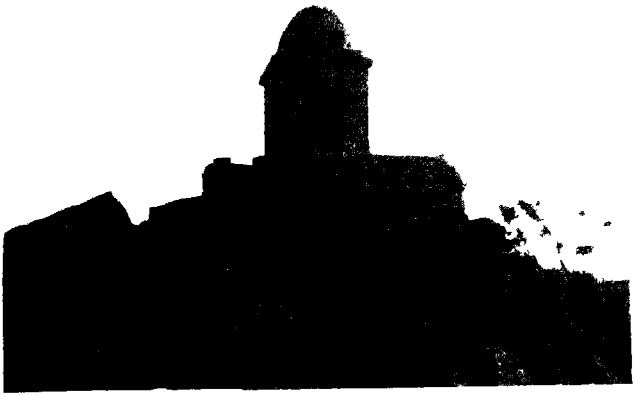


॥ सं ॥ १६३३ का जेष्ठ शुक्लद्वादश्यां शनि वासरे श्री अभिनंदन जिनेन्द्रस्य चरण पादुका । जीर्णोद्धार रुपा श्रीसंघेन कारिता मलधार पूनमीया श्रीविजयगच्छे श्री जिनचंद्रसागर सूरि पट्टोदन प्रभाकर भट्टारक श्री जिन शांति सागर सूरिभि: प्रतिष्ठिता स्थापिताच्च शुभं श्रेयसे भवतु ।

श्री जलमन्दिरजी



श्री शुभस्वामीजी की देहरी



॥ जलमन्दिर ॥

यह पवित्र स्थान चारों तरफ पहाड़ियोंसे घिरा हुआ अत्यन्त सुन्दर तथा रमणीक दृश्यवाला प्रतीत होता है। इस स्थानसे एक रास्ता श्रीवासुपुज्यजीकी टोंकको जाता है। दूसरा रास्ता श्रीमुनिसुव्रत स्वामीजोकी टोंकको जाता है। तीसरा रास्ता श्रीकुंथुनाथजीकी टोंकको, जाता है। इस स्थान-पर एक पानीका झरना है, जो के कुपरूपमें बना दिया गया है और यहांपर यात्रियोंको स्नानादिका भी प्रबन्ध श्रेष्ठतया मिल जाता है। पूजन करनेवाले पुजारी वगैरह लोग भी इसी स्थानपर रहते हैं। यहां कईएक धर्म्मशालायें भी हैं। यह मन्दिर बड़ाही विशाल और शोभनोक है तथा यह शुभस्थान जलमन्दिर नामसे लोगोंमें प्रसिद्ध है। इस मन्दिरजीमें मूलनायक श्रीपार्श्वनाथ भगवान हैं।

॥ श्री शुभस्वामी गणधर ॥

यह स्थान जलमन्दिरसे करीब १॥ माइल है। इसी स्थान-पर श्रीपार्श्वनाथजीके प्रथम गणधर श्रीशुभस्वामोजीके चरण-पादुका विराजमान हैं। यह स्थान श्वेताम्बरसंघकी ओरसे बना हुआ है। इस स्थानका रास्ता अत्यन्त कठिन होनेके कारण यात्री लोग नहीं जाते।

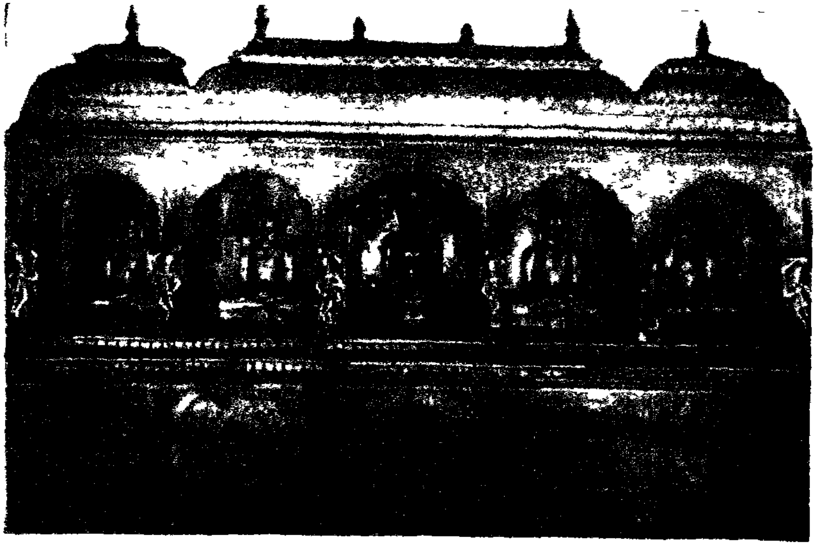
॥ श्रीजलमन्दिरजी ॥

(श्रीमूलनायकजी) ॥ सं० १८२२ वर्षे वैशाख शुदि १३ गु० सा सुगालचंदेन श्रीपार्श्वनाथ बिम्बं कारापिता । प्र । सकल सूरिभिः । दाहिने तरफ (श्रीसम्भवनाथजी) ॥ सं० १८२२ वर्षे वैशाख शुदि १३ गुरौ श्री मगसुदावाद वास्तव्य साउ सुखा गोत्रीय उसवंस ज्ञातीय वृद्धशाखायं सा सुगालचंद भार्यायां केसरकया आत्मसंश्रयार्थं श्रीसमेत गिरौ श्रीजैन बिहारे श्रीसंभवनाथ बिम्बं कारापितं प्रतिष्ठितं च । सुविहिताग्रणीभि· । सकल सूरिभिः इति मंगलं ।

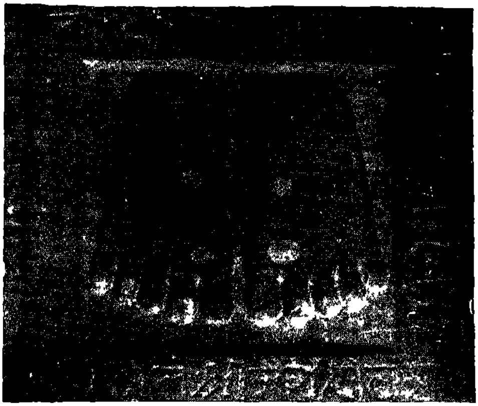
श्याम वर्ण श्रीपार्श्वनाथजी । (सहस्रफणा श्रीपार्श्वनाथजी) ॥ संवत् १८२२ वर्षे वैशाख शुदि १२ गुरौ श्री मगसुदावाद वास्तव्य साउ सुखा गोत्रीय वुंसवंस ज्ञाती वृद्धशाखायाम् ॥ लालचंद सुत सुगालचंदेन श्रीमद्गुरुणा उपदेशात् आत्म संश्रेयार्थं च श्रीसमेतशैल श्रीजैन बिहारे श्री सहस्र पार्श्वजिन बिंबं कारापितं च सुविहिताग्रणीभिः सकल सूरिवरैः ॥ मंगलं ॥

(दाहिने तरफ) श्रीऋषभदेवजी । श्याम वर्ण श्रीपार्श्वनाथजी । श्री अभिनन्दनजी । इत्यादि ।

श्री जलमंदिर जी



श्री वारिषेणजी



श्री वर्द्धमानजी



श्री वारिषेणजी-श्री वर्धमानजी

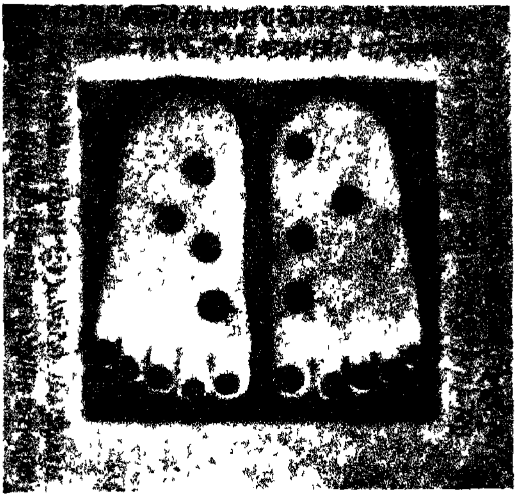
इन शाश्वते तीर्थंकरोंकी पादुकायें श्री जैनश्वेताम्बर श्रीसंघकी ओरसे स्थापित की गयी हैं।

श्री ऋषभाननजी, श्री वर्धमानजी, श्री चन्द्राननजी, और श्री वारिषेणजी ये शाश्वत चारों भगवानकी सर्व रत्नमयी प्रतिमायें नन्दीश्वर द्वीपके अञ्जनगिरि पर्वतीय चैत्यालयोंमें चतुर्मुख रूपसे विराजमान हैं। और इन चारों प्रतिमाओंका ठाणांगसूत्रके चौथे ठानेके दूसरे उद्देशेमें वर्णन किया गया है।

श्री धर्म्मनाथजी ।

नाम	श्री धर्म्मनाथजी
नगरी	रत्नपुरी
वंश	इक्ष्वाकु
पिता	भानु राजा
माता	सुव्रता रानी
विमान	वैजयंत (दूसरा अनुत्तर)
च्यवन	वैशाख शुक्ला ७
जन्म	माघ शुक्ला ३
चिन्ह	वज्र
वर्ण	सुवर्ण
अवगाहना	पैंतालीस धनुष
दीक्षा	माघ शुक्ला १३
केवलज्ञान	पौष शुक्ला १५
मोक्ष-स्थान	सम्मेतशिखर
तप	मासक्षमण
साधु-संख्या	एक सो आठ सहित
आयुष्य	दश लाख वर्ष
निर्व्वाण	ज्येष्ठ शुक्ला ५

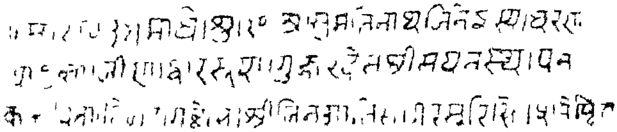
श्री धर्म्मनाथजी



॥ सवत १८९२ माघ शुदि ५ तिथौ । श्री धर्मनाथ जिनेन्द्रस्य चरणपादुका ।
। जीर्णोद्धार रूपा [illegible] । सेठ नरसिंहदास [illegible] केसरजी नाम ।
। केन स्थापिता कारापिता । पूर्णिमा विजय गच्छे [illegible] भट्टारक श्री ।
॥ जिन शांतिसागर सूरिभि । प्रतिष्ठितं ॥ स्थापित [illegible] ।

श्री सुमतिनाथजी





श्री सुमतिनाथजी ।

नाम	श्री सुमतिनाथजी
नगरी	कंचनपुर (अयोध्या)
वंश	इक्ष्वाकु
पिता	मेघ राजा
माता	सुमङ्गला रानी
विमान	जयन्त (तीसरा अनुत्तर)
च्यवन	श्रावण शुक्ला २
जन्म	वैशाख शुक्ला ८
चिन्ह	क्रौंच (पक्षी)
वर्ण	कंचन
अवगाहना	तीन सौ धनुष
दीक्षा	वैशाख शुक्ला ९
केवलज्ञान	चैत्र शुक्ला ११
मोक्ष-स्थान	सम्मेतशिखर
तप	मासक्षमण
साधु-संख्या	एक सहस्र सहित
आयुष्य	चालीस लाख पूर्व
निर्व्वाण	चैत्र शुक्ला ९

श्री शान्तिनाथजी ।

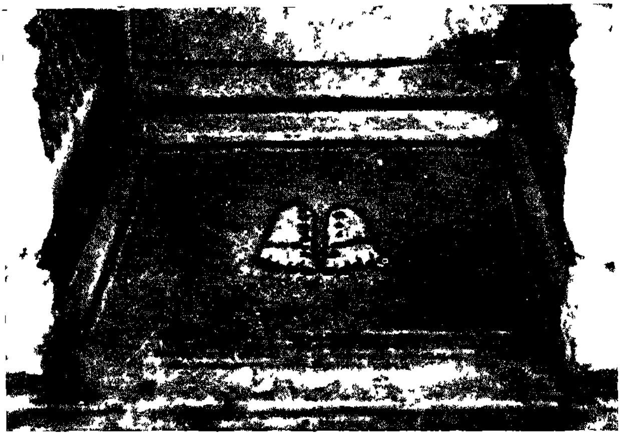
नाम	श्री शान्तिनाथजी
नगरी	हस्तिनापुर
वंश	इक्ष्वाकु
पिता	विश्वसेन राजा
माता	अचिरा रानी
विमान	सर्वार्थ सिद्ध (पञ्चम अनुत्तर)
च्यवन	भाद्रपद कृष्णा ७
जन्म	ज्येष्ठ कृष्णा १३
चिन्ह	मृग
वर्ण	सुवर्ण
अवगाहना	चालीस धनुष
दीक्षा	ज्येष्ठ कृष्णा १४
केवलज्ञान	पौष शुक्ला ६
मोक्ष-स्थान	सम्मेतशिखर
तप	मासक्षमण
साधु-संख्या	नौ सौ सहित
आयुष्य	एक लाख वर्ष
निर्वाण	ज्येष्ठ कृष्णा १३

श्री शांतिनाथजी



संवत १८९३ । मा । शु । ३ । श्री शांतिनाथ जिनेंद्र चरणपादुका
श्री [illegible] सेठ [illegible]
[illegible] श्री शांतिसागर
। सूरिभि: प्रतिष्ठिता । स्थापिता च ।

श्री वर्धमानजी



॥ सं १९२४ फाल्गुण वदि ५ श्री वर्धमानजी का चरण पादुका मकसुदाबाद वासी राय धनपति सिंह दुगड़ने स्थापित किया था सो उसकी छत्री बिजली उपद्रव सु गिरगइ उसपर सं १९६५ के फाल्गुण सुदी ६ को कच्छ मांडवी वासी सा: जगजीवन वालजी ने जीरण उधार कराइ।

श्री वर्द्धमान स्वामीजी।

नाम	श्री वर्द्धमान स्वामीजी
स्वर्ग	प्राणत (दशवां)
च्यवन	आषाढ़ शुक्ला ६
गर्भापहार	आश्विन कृष्णा १३
नगरी	क्षत्रिय कुण्ड
वंश	इक्ष्वाकु
पिता	सिद्धार्थ राजा
माता	त्रिशला रानी
जन्म	चैत्र शुक्ला १३
चिन्ह	सिंह
वर्ण	सुवर्ण
अवगाहना	सात हाथ
दीक्षा	मार्गशिर्ष कृष्णा १०
केवलज्ञान	वैशाख शुक्ला १०
मोक्ष-स्थान	पावापुरी
तप	छट्ठ—(बेला)

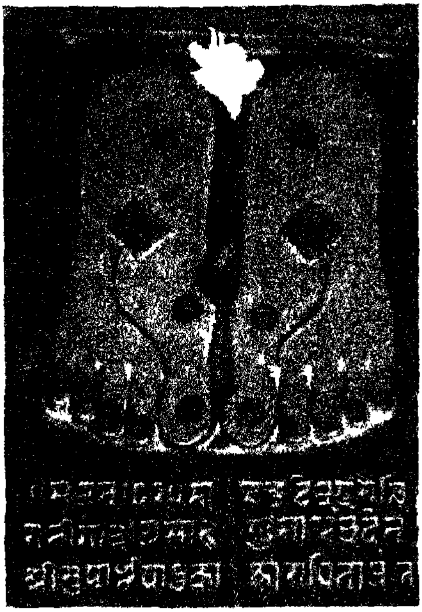
स्वयं मोक्ष प्राप्त किया।

आयुष्य	बहत्तर वर्ष
निर्वाण	कार्त्तिक कृष्ण ३० (अमावस्या)

श्री सुपार्श्वनाथजी।

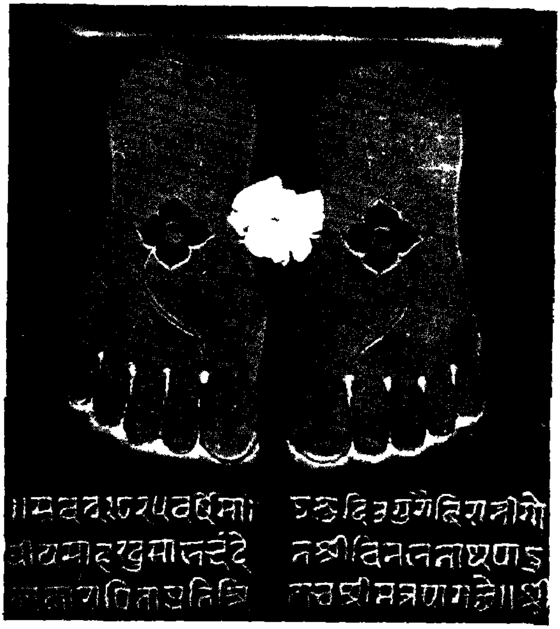
नाम	श्री सुपार्श्वनाथजी
नगरी	वाणारसी
वंश	इक्ष्वाकु
पिता	प्रतिष्ठ राजा
माता	पृथ्वी रानी
विमान	ग्रैवेक (षष्ठम)
च्यवन	भाद्रपद कृष्णा ८
जन्म	ज्येष्ठ शुक्ला १२
चिन्ह	स्वस्तिक (साथिया)
वर्ण	कंचन
अवगाहना	दो सौ धनुष
दीक्षा	ज्येष्ठ शुक्ला १३
केवलज्ञान	फाल्गुन कृष्णा ६
मोक्ष-स्थान	सम्मेतशिखर
तप	मासक्षमण
साधु-संख्या	पांच सौ सहित
आयुष्य	बीस लाख पूर्व
निर्वाण	फाल्गुन कृष्णा ७

श्री सुपार्श्वनाथजी



संवत १८ २२ मिति [illegible] श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र चरणपादुका।
[illegible] सेठ उमाचंद [illegible] प्रतिष्ठिता
[illegible] श्री जिन [illegible] सूरिभिः। [illegible]

श्री विमलनाथजी



॥संवत् १८९१ माघ शुक्ले १० चन्द्रे श्री बिमलनाथ जिनेन्द्रस्य पादुका
॥ हारसूण। गुजरात का। श्री संघेन तया स्थापना कारापिता। मलधार
॥श्री विजयगच्छे। नायुध। भट्टारक। श्री पूज्य। श्री जिन शांति सागर सूरि
। निष्ठिता। स्था। पे न ३।

श्री विमलनाथजी।

नाम	श्री विमलनाथजी
नगरी	कम्पिलपुर
वंश	इक्ष्वाकु
पिता	कृतवर्म राजा
माता	श्यामा रानी
विमान	सहस्रार (अष्टम)
च्यवन	वैशाख शुक्ला १२
जन्म	माघ शुक्ला ३
चिन्ह	वराह (शूकर)
वर्ण	सुवर्ण
अवगाहना	साठ धनुष
दीक्षा	माघ शुक्ला ४
केवलज्ञान	पौष शुक्ला ६
मोक्ष-स्थान	सम्मेतशिखर
तप	मासक्षमण
साधु-संख्या	छह हजार सहित
आयुष्य	साठ लाख वर्ष
निर्वाण	आषाढ़ कृष्णा ७

श्री अजितनाथजी ।

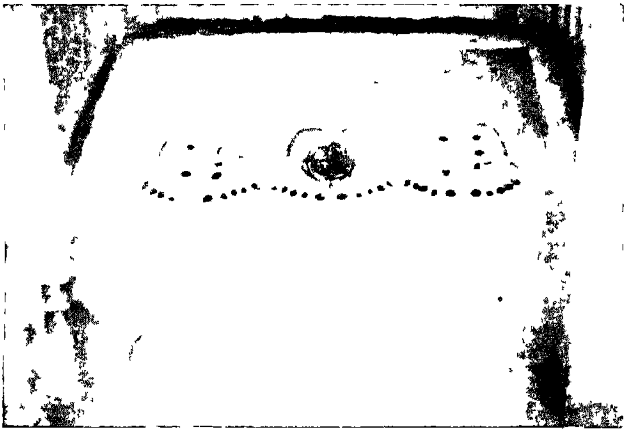
नाम	श्री अजितनाथजी
नगरी	अयोध्या
वंश	इक्ष्वाकु
पिता	जितशत्रु राजा
माता	विजया रानी
विमान	विजय (प्रथम अनुत्तर)
च्यवन	वैशाख शुक्ला १३
जन्म	माघ शुक्ला ८
चिन्ह	गज (हाथी)
वर्ण	सुवर्ण
अवगाहना	चार सौ पचास धनुष
दीक्षा	माघ शुक्ला ९
केवलज्ञान	पौष शुक्ला ११
मोक्ष-स्थान	सम्मेतशिखर
तप	मासक्षमण
साधु-संख्या	एक सहस्र सहित
आयुष्य	बहत्तर लाख पूर्व
निर्व्वाण	चैत्र शुक्ला ५

श्री अजितनाथजी



॥संवत १९८२।माघे।सु।१०।बुधे।श्री।अजितनाथ
जिनेंद्रस्य चरणपादुका जीर्णोद्धार कृत श्री संघेन
कारापिता।मलधार पूर्णिमा श्री पक्षिजयगच्छे।भट्टा
रक।श्री जिनशांतिसागरसूरिभिः।प्रतिष्ठितं च॥

श्री नेमनाथजी



॥ संवत् १९३४ माघ वदि ५ बुधवार श्री नेमनाथ जिन तीन कल्यानक रेवत भवतो तस्य चरण न्यास. समेत शिखेर स्थापिता मकसुदाबाद अजीमगंज वास्तव्य दुगड़ प्रतापसिंह भार्जा महताब कुमर सुत लक्ष्मीपत कनिष्ठभ्राता धनपत सिंह कारापितं प्रतिष्ठितं श्री पूज्यजी भः श्री जिनहंस सूरानः सरव बृहत् खरतर गच्छे ॥

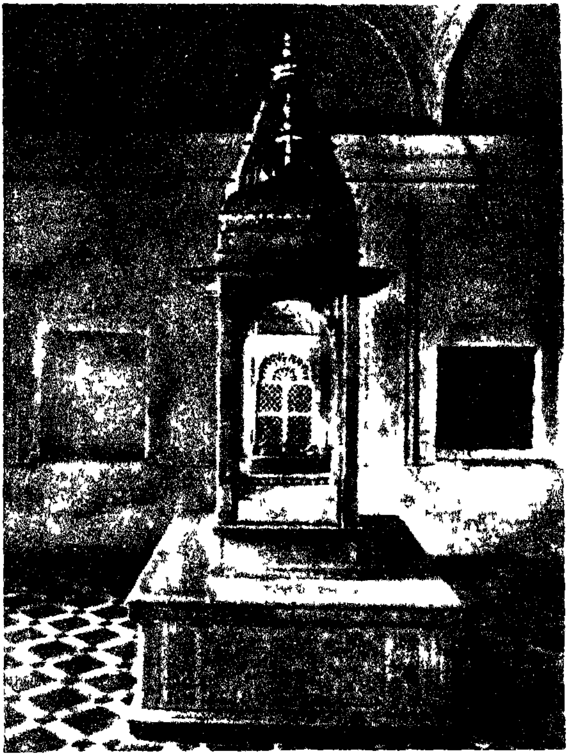
श्री नेमिनाथजी।

नाम	श्री नेमिनाथजी
नगरी	शौरिपुर
वंश	हरिवंश
पिता	समुद्रविजय राजा
माता	शिवा रानी
विमान	अपराजित (चतुर्थ अनुत्तर)
च्यवन	कार्त्तिक कृष्णा १२
जन्म	श्रावण शुक्ला ५
चिन्ह	शंख
वर्ण	श्याम
अवगाहना	दश धनुष
दीक्षा	श्रावण शुक्ला ६
केवलज्ञान	आश्विन कृष्णा १५
मोक्ष स्थान	गिरनार
तप	मासक्षमण
साधु-संख्या	पांच सौ छत्तीस सहित
आयुष्य	एक हजार वर्ष
निर्वाण	आषाढ़ शुक्ला ८

श्री पार्श्वनाथजी ।

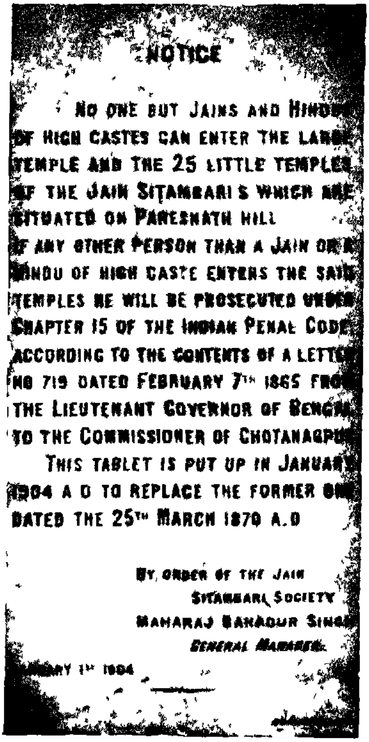
नाम	श्री पार्श्वनाथजी
नगरी	वाणारसी
वंश	इक्ष्वाकु
पिता	अश्वसेन राजा
माता	वामा रानी
स्वर्ग	प्राणत (दशम)
च्यवन	चैत्र कृष्णा ४
जन्म	पौष कृष्णा १०
चिन्ह	सर्प
वर्ण	नील (हरित)
अवगाहना	नव हाथ
दीक्षा	पौष कृष्णा ११
केवलज्ञान	चैत्र कृष्णा ४
मोक्ष-स्थान	सम्मेतशिखर
तप	मासक्षमण
साधु-संख्या	तेतीस सहित
आयुष्य	एक सौ वर्ष
निर्वाण	श्रावण शुक्ला ८

श्री पार्श्वनाथजी



संवत् १८५६ मिति माघ मासे शुक्ल पक्षे पंचमो तिथौ। बुधवारे श्री पार्श्वनाथ जिनस्य चरण न्यासः श्री संघाग्रहेण। श्री बृहत् खरतर गच्छीय। जंगम। युग प्रधान भट्टारक। श्री जिनचंद्र सूरिभिः प्रतिष्ठितः श्रीरस्तु ॥

शिलालेख


NOTICE
NO ONE BUT JAINS AND HINDU
OF HIGH CASTES CAN ENTER THE LARG
TEMPLE AND THE 25 LITTLE TEMPLES
OF THE JAIN SITAMBARI S WHICH ARE
SITUATED ON PARESNATH HILL
IF ANY OTHER PERSON THAN A JAIN OR A
HINDU OF HIGH CASTE ENTERS THE SAID
TEMPLES HE WILL BE PROSECUTED UNDER
CHAPTER 15 OF THE INDIAN PENAL CODE
ACCORDING TO THE CONTENTS OF A LETTE
NO 719 DATED FEBRUARY 7TH 1865 FRO
THE LIEUTENANT GOVERNOR OF BENG
TO THE COMMISSIONER OF CHOTANAGP
THIS TABLET IS PUT UP IN JANUAR
1904 A D TO REPLACE THE FORMER ON
DATED THE 25TH MARCH 1870 A.D
BY ORDER OF THE JAIN
SITAMBARI SOCIETY
MAHARAJ BAHADUR SING
GENERAL MANAGER.
ARY 1ST 1904

शिलालेख

जैन और उच्च वर्णके हिन्दुओंके सिवा कोई भी पारसनाथ पहाड़पर स्थित जैन श्वेताम्बरी समाजके बड़े मन्दिर तथा २५ छोटे मन्दिरोंमें प्रवेश नहीं कर सकता। यदि जैन या उच्च वर्णके हिन्दूके सिवा कोई अन्य पुरुष उक्त मन्दिरोंमें प्रवेश करेगा तो बंगाल-के लेफ्टिनेण्ट गवर्नर द्वारा छोटे नागपुरके कमिश्नरको ता० ७ फरवरी सन १८६५ ई० को दिये हुए पत्र नं० ७१६ के मजमूनके बमुजिब उसपर ताजीरात हिंदके १५ वें अध्यायके अनुसार मुकदमा चलाया जायगा।

यह शिला-लेख २५ मार्च सन १८७० ई० के पुराने शिलालेखके स्थानपर जनवरी सन १९०४ में स्थापित किया गया है।

जैन श्वेताम्बरी समाजकी आज्ञासे
महाराज बहादुर सिंह जैनरल मैनेजर
ता० १ जनवरी सन १९०४ ई०

जंगम युग प्रधान भट्टारक दादा साहब श्री १००८ जिन-दत्तसूरिजी तथा श्री जिनकुशल सूरिजीका संक्षिप्त परिचय।

दादा साहब श्री जिनदत्तसूरिजीका जन्म वि० स० ११३२ के वर्षमें धुन्धका नगरमें हुआ था। आपके पिताका नाम वाछिग मन्त्री, माताका नाम वाहड़देवी और गोत्र हुम्बड़ था। आपने ११४१ के वर्षमें दीक्षा ग्रहण की थी और ११६८ के वैशाख वदी ६ को आचार्यपदको प्राप्त किया था। आपने ही सवालाख अजैनोंको प्रतिबोध देकर जैनधर्म ग्रहण कर-वाया था। आपका १२११ के आषाढ़ शुक्ला ११ के दिन अजमेर नगरमें स्वर्गवास हुआ था। बड़े ददाजीके नामसे प्रसिद्ध हुए सर्वसंघ आपको पूजने और ध्यानें लगा।

दादा साहब श्री जिनकुशलसूरिजीका जन्म विक्रम स० १३३० के वर्षमे समियाना गांवमे हुआ था, आपके पिताका नाम मन्त्री जिल्हागर था, माताका नाम जयत श्री और गोत्र छाजेहड़ था। स० १३४७ मे आपने दीक्षा ली थी, अनन्तर १३७७ के वर्षमें आपने सूरिपद प्राप्त किया था। आपका स० १३८९ के फाल्गुन वदी अमावसके दिन देरावर नगरमें स्वर्गवास हुआ था।

प्रथम दर्शन सोमवती पूनको दिया था तिस कारण सोम-वार पूनमको आपके चरणकमलोंकी विशेष पूजा होती है।

(दादासाहब)

श्री जिन दत्तसूरिजी श्री जिन कुशलसूरिजी

